

21/11/24. धनावली पेशे हूँ फतावली घा अक्तोस्त
बिधा जवा। अन्न वाइ धी कानलिनं
कलवटा के कश्चिना जगाए उपातण्ड कृपिणी
धे जंगान्या के ध्याकनप के बिपारा धीन
ही कृ. पूकाण बनी हटा पर स्वाजि
बिधा जगाही

